श्रीमती श्यामादेवी

डिग्री कालेज ऑफ साइन्स एण्ड मैनेजमेन्ट

(डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से सम्बद्ध)

सिसवाँ, रामपुर सकरवारी – अम्बेडकर नगर

(बी0 एड0)

सत्र : 201.....–201.....

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका का नाम ....शैबिन्स कुमार उपाध्याय........

शैक्षिक योग्यता........बी० एड० प्रथम........

महाविद्यालय अनुक्रमांक........29603118........

विश्व विद्यालय अनुक्रमांक................

शिक्षण विषय........अर्थशास्त्र सूक्ष्म शिक्षण........

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पाठ योजना - 1

कक्षा :- XI
विषय :- अर्थशास्त्र
प्रकरण :- ब्याज

दिनांक :-
समय :- 5 मिनट
कालांश :- 1

प्रस्तावना :- कौशल

उद्देश्य :-

1- छात्राध्यापकों में पूर्व ज्ञान के परीक्षण द्वारा पाठ योजना को उचित रूप से प्रारम्भ करने की योग्यता का विकास करना।

2- छात्राध्यापकों में विभिन्न कथनों को उचित क्रम में प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना।

3- छात्राध्यापकों में अधिगम के प्रति प्रेरणा उत्पन्न करने की योग्यता का विकास करना।

4- छात्राध्यापकों में सीखी गई विषय-वस्तु एवं सीखने योग्य विषय के मध्य उचित सम्बन्ध बनाने की योग्यता का विकास करना।

पूर्व ज्ञान :- छात्रों को ब्याज से सम्बन्धित सामान्य जानकारी है।

निरीक्षण तालिका

क्र.सं.	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
1-	आवाज की स्पष्टता भाव-भंगिमा और दृष्टि सम्पर्क					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

2-	दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग					
3-	गुरु-शिष्य अन्तःक्रिया					
4-	कथनों की क्रमबद्धता					
5-	समयावधि					

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

प्रस्तुतीकरण :-

छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रिया
प्रश्न-1:- भारत विकास की दृष्टि से किस श्रेणी का देश है?	उत्तर – विकासशील।
प्रश्न-2:- भारत के प्रमुख उद्योग-धन्धे बताइए?	उत्तर :- चीनी उद्योग, कपड़ा उद्योग
प्रश्न-3:- उद्योग-धन्धों के विस्तार हेतु पूंजीपतियों को धन कहाँ से प्राप्त होता है?	उत्तर :- बैंक से
प्रश्न-4:- बैंक से उधार ली गई धनराशि पर अतिरिक्त दिया जाने वाला धन क्या कहलाता है?	उत्तर :- ब्याज
प्रश्न-5:- ब्याज की परिभाषा बताओ। (समस्यात्मक प्रश्न)	उत्तर :- कम छात्रों ने उत्तर दिया

उद्देश्य कथन :- आज हम 'ब्याज' के विषय में अध्ययन करेंगे।

पाठ योजना - 2

कक्षा :-
दिनांक :-
विषय :- अर्थशास्त्र
समय :- 5-7 मिनट
प्रकरण :- भूमि
कालांश :- I

कौशल :- व्याख्या

उद्देश्य :-

1- कथनों को प्रारम्भ एवं समाप्त करने की योग्यता का विकास करना।

2- व्याख्या के दौरान विचारों को एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करने की योग्यता का विकास करना।

3- विषय-वस्तु से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं को प्रकाश में लाना।

4- छात्रों की बोधशक्ति के परीक्षण की योग्यता का विकास करना।

निरीक्षण तालिका :-

क्र.सं.	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
1-	कथनों की स्पष्टता					
2-	व्याख्या में प्रश्नीकरण					
3-	व्याख्या में धारा प्रवाह					
4-	योजनाबद्ध पुनरावृत्ति					
5-	मुख्य बिन्दुओं की सारांश प्रस्तुति					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

प्रस्तुतीकरण :-

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया	शिक्षण सहायक सामग्री/ श्यामपट्ट कार्य
भूमि की परिभाषा एवं लक्षण	साधारण बोलचाल की भाषा में हम भूमि का अर्थ जमीन से लगाते हैं। जिस पर हम चलते, फिरते हैं या जिस पर हम घर बनाकर रहते हैं। किन्तु अर्थशास्त्र विषय के अन्तर्गत इसका अर्थ बहुत विस्तृत रूप में लिया गया है। आर्थिक दृष्टि से भूमि के अन्तर्गत वे सभी पदार्थ सम्मिलित हैं जो मनुष्य को प्रकृति से निःशुल्क प्रदान किये गये हैं। "भूमि में वे समस्त शक्तियाँ आती हैं जो प्रकृति निःशुल्क उपहारों के रूप में प्रदान करती है।" एस. के. चन्द्र	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	परिभाषा :- एस. के. चन्द्र — "भूमि में वे समस्त शक्तियाँ सम्मिलित हैं, जो प्रकृति निःशुल्क उपहारों के रूप में प्रदान करती है।"

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

	भूमि के अन्तर्गत निम्न तत्व सम्मिलित होते हैं- 1- पृथ्वी की ऊपरी सतह पर्वत, मैदान आदि। 2- जलाशय (नदी, झील, समुद्र आदि) 3- खनिज सम्पत्तियाँ (लोहा सोना, चाँदी) 4- विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ (वन, घास वृक्ष) 5- भूमि पर विचरण करने वाले पशु-पक्षी, मत्स्य 6- हवा, पानी, गर्मी, शीत जलवायु आदि		

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पाठ-योजना-3

दिनांक :-

कक्षा :-

समय :- 5-7 मिनट

विषय :- अर्थशास्त्र

कलांश :- I

प्रकरण :- उत्पत्ति के साधन

कौशल :- प्रश्नीकरण

उद्देश्य :-

1- छात्राध्यापक द्वारा कक्षा के समस्त छात्रों को अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करना है।

2- छात्रों में उनकी चिन्तन एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करना।

3- छात्रों में विषय के प्रति रूचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करना।

4- छात्रों में विभिन्न सूचनाओं को एकत्रित करने और उन्हे प्रयोग में लाने की क्षमता का विकास करना।

निरीक्षण तालिका :-

क्र.सं०	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
1-	प्रश्नों की संरचना					
2-	प्रश्नों का केन्द्रीकरण					
3-	प्रश्नों का उचित वितरण					
4-	प्रश्नों के मध्य उचित विराम					
5-	प्रश्नों का सम्बन्धित शिक्षण बिन्दु से सम्बन्ध					
6-	प्रश्नों का कठिनता स्तर					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर :-

प्रस्तुतीकरण :-

विषय वस्तु	छात्राध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया	शिक्षण सहायक सामग्री
'उत्पत्ति के साधन' जो वस्तुएँ या सेवाएँ	प्रश्न-1:- उत्पादन कार्य में सहायक सेवा एवं वस्तुओं को क्या कहते हैं?	उत्तर– 'उत्पत्ति के साधन' कहा जाता है।	उत्तर-: 'उत्पत्ति के साधन'
उत्पादन कार्य में सहायक होती हैं। उन्हे उत्पत्ति	प्रश्न-2:- उत्पत्ति के साधनों को आधुनिक अर्थशास्त्री किस नाम से पुकारते हैं?	उत्तर:- आधुनिक अर्थशास्त्री इन्हे निविष्टियाँ कहते हैं।	
के साधन कहते हैं। प्रो० बेन्हम ⇒ "कोई वस्तु या सेवा जो किसी भी स्तर पर उत्पादन कार्यों में सहयोग देती है। उत्पादन का साधन कहलाती है"	प्रश्न-3:- उत्पत्ति के साधनों को कितने भागों में विभक्त किया जा सकता है?	उत्तर–(1) मानवीय प्रयत्न। (2) बाह्य प्रयत्न	उत्तर-1 मानवीय प्रयत्न 2 बाह्य प्रयत्न

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इन्हे निर्दिष्टियाँ और जो माल तैयार होता है, उसे उत्पादन अथवा निपज कहा जाता है।	प्रश्न-4:- बाह्य प्रयत्न के अन्तर्गत आने वाले साधन बताइए।	उत्तर- भूमि और पूँजी।	
	प्रश्न-5:- उत्पादन के साधन कौन-कौन से हैं?	उत्तर- भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन, साहस	
उत्पत्ति के साधन दो वर्गों में बांटे गये हैं-			
1- मानवीय प्रयत्न			
2- बाह्य प्रयत्न			
मानवीय- श्रम, संगठन, साहस।			
बाह्य- भूमि, पूँजी			

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पाठ योजना – 5

कक्षा :-
दिनांक :-
विषय :- अर्थशास्त्र
समय :- 10 मिनट
प्रकरण :- तुष्टिगुण – सीमान्त और कुल तुष्टिगुण **कालांश :-** I

कौशल :- श्यामपट्ट

उद्देश्य :-

* 1- श्यामपट्ट लेखन द्वारा छात्राध्यापक के निम्नलिखित योग्यताओं का विकास करना –
(अ) लेख में स्पष्टता
(ब) श्यामपट्ट कार्य में दक्षता
(स) श्यामपट्ट लेखन की उपयुक्तता

* 2- छात्राध्यापक में निम्नलिखित योग्यताओं का अनुभव कराना –
(क) छात्रों में स्पष्ट रूप से प्रत्ययों को समझने की योग्यता का विकास करना।
(ख) छात्रों को पुनर्बलित करते हुए मौखिक शिक्षण को स्पष्ट करना।
(ग) छात्रों का ध्यान आकर्षित करना एवं इसे बनाये रखने की योग्यता का विकास करना।

निरीक्षण तालिका :-

क्र॰सं॰	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
1-	लिखावट में स्पष्टता					
(क)	अक्षरों का आकार एवं समान अन्तर					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

क्र.सं.	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
2.	श्यामपट्ट लेखन मे स्वच्छता					
(क)	अक्षरों का एक सीध मे होना					
(ख)	रेखाओं की बीच पर्याप्त दूरी					
(ग)	अक्षरों मे लिप्त लेखन न होना।					
3.	श्यामपट्ट कार्य का औचित्य					
(क)	शिक्षण बिन्दुओं मे तारतम्यता					
(ख)	सरलता एवं संक्षिप्तता					
(ग)	छात्रों का ध्यान आकर्षित करना।					

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

प्रस्तुतीकरण :-

विषयवस्तु	छात्राध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
तुष्टिगुण :- सीमान्त और कुल तुष्टिगुण मे सम्बन्ध सीमान्त तुष्टिगुण मे तथा कुल	छात्राध्यापक श्यामपट्ट कार्य करेगा।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा श्यामपट्ट कार्य कॉपी पर उतारेंगे।	सीमान्त तुष्टिगुण और कुल तुष्टिगुण मे सम्बन्ध 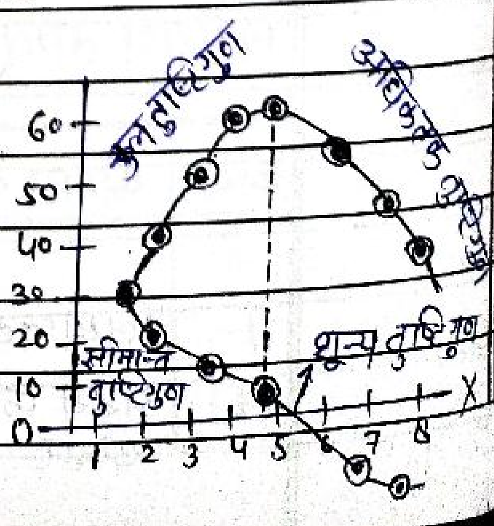

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

तुष्टिगुण में तीन प्रकार का सम्बन्ध होता है- 1- बढ़ता हुआ कुल तुष्टिगुण 2- अधिकतम कुल तुष्टिगुण 3- घटता हुआ तुष्टिगुण			

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पाठ योजना -5

दिनांक :-
कक्षा :-
समय :- 5-7 मिनट
विषय :- लघु अर्थशास्त्र
कालांश :- I
प्रकरण :- लघु उद्योग

कौशल :- पुनर्बलन

उद्देश्य :-

1- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु छात्रों को तैयार करना एवं उन्हे सम्मिलित करना है।
2- छात्रों को नवीन प्रत्ययों को सीखने के लिए प्रेरित करना।
3- छात्रों के विषय के प्रति झिझक को दूर करना है।
4- छात्रों को प्रोत्साहित करना एवं आत्म-विश्वास की वृद्धि।
5- छात्रों की त्रुटियों को सुधारकर अधिगम की गति को प्रभावी।

SMT SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

निरीक्षण तालिका :-

क्र.सं०	कौशल के अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	सामान्य	निम्न
1-	धनात्मक शाब्दिक पुर्नबलन					
2-	धनात्मक अशाब्दिक पुर्नबलन					
3-	ऋणात्मक शाब्दिक पुर्नबलन					
4-	ऋणात्मक अशाब्दिक पुर्नबलन					
5-	अतिरिक्त पुर्नबलन					

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

प्रस्तुतीकरण :-

विषयवस्तु	छात्राध्यापक क्रिया	छात्र क्रियाएँ	पुर्नबलन	श्यामपट्ट कार्य
लघु उद्योग- लघु उद्योग वे उद्योग हैं जो प्रायः नगरों एवं कस्बों में स्थित होते हैं। इन उद्योगों में शक्ति और मशीन का प्रयोग होता है और इसमें मजूदरी प्राप्त श्रमिक कार्य करते हैं। उदा०:- डेरी उद्योग	**प्रश्न-** लघु उद्योग किसे कहते हैं?	**उत्तर-** वे उद्योग जो प्रायः नगरों एवं कस्बों में स्थित होते हैं।	(उत्तर सही होने पर) शाबाश (धनात्मक शाब्दिक)	**उत्तर-** लघु उद्योग
	प्रश्न- लघु उद्योगों में किसकी सहायता से काम लिया जाता है।	**उत्तर-** हाथों द्वारा	ना में सिर हिलाना (उत्तर गलत होने पर ऋणात्मक अ-शाब्दिक)	
	प्रश्न- लघु उद्योग की एक विशेषता बताइए।	**उत्तर-** इनमें कुटीर उद्योगों से प्राप्त उत्पाद को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है।	हाँ में सिर हिलाना (उत्तर सही होने पर धनात्मक अ-शाब्दिक)	**उत्तर-** कुटीर उद्योगों से कच्चे माल की प्राप्ति।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

कागज उद्योग चीनी उद्योग आदि। **विशेषताएँ-:** ① मशीनो की सहायता से कार्य किया जाता है। ② कच्चा माल कुटिर उद्योगो से प्राप्त होता है ③ विस्तृत क्षेत्र की मांग पूरी करने में सक्षम।	**प्रश्न-** लघु उद्योग का कोई एक उदाहरण बताओ।	**उत्तर-** मुर्गीपालन	आपका जवाब गलत है (उत्तर गलत होने पर ऋणात्मक शाब्दिक)

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management